Page 28

زمانے کا رنگ آپ دیکھ رہے ہیں۔ جھوٹی عزت اور نقصان رساں
لذتوں کا شوق طبیعتوں پر غالب ہے۔ نام ہے ملکی ترقی کا لیکن کوشش
ان باتوں کی ہو رہی ہے جن سے سوسائٹی ٹکڑے ٹکڑے ہو جائے۔

رقعات، ص ۱۱۹

یہ نظمیں انقلاب روکنے کے لئے نہیں ہیں۔ یادگار انقلاب ہیں۔
حصۂ دوم میں یہ اشعار پایئے گا ؎

نظم اکبر کو سمجھ لو یادگار انقلاب	یہ اسے معلوم ہے ٹلتی نہیں آئی ہوئی

رقعات، ص ص ۳۶، ۳۷

Page 30

کہا منصور نے خدا ہوں میں	ڈارون بولے بوزنا ہوں میں
ہنس کے کہنے لگے مرے اک دوست	فکر ہر کس بقدر ہمت اوست

کلیات، جلد سوم، ۱۴۰، ۱۴۱

تو و طوبیٰ و ما و قامت یار	فکر ہر کس بقدر ہمت اوست

حافظ، دیوان، ص ۲۷

Page 31

اگر ڈارون کی یہ تھیوری درست ہے کہ انسان بندر سے پیدا ہوا ہے
تو اس منزل تمدن پر اہل یورپ کو انسانیت کے بہت سے اعلیٰ محاسن
کا حامل ہونا چاہیئے تھا۔ مگر ایسا نہیں۔ اس پر افسوس کرتا ہوں ؎

یا الٰہی یہ کیسے بندر ہیں	ارتقاء پر بھی آدمی نہ ہوئے

بزم اکبر، ص ۱۶۵

Page 32

جو گذرو گے ادھر سے میرا اجڑا گاؤں دیکھو گے	شکستہ ایک مسجد ہے بغل میں گورا بارک ہے

کلیات، جلد دوم، ص ۴۸

Appendix II

Page 5

मुरीद – ए – दहर हुए वज़ा मग़रिबी कर ली
नये जनम की तमन्ना में ख़ुदकुशी कर ली

कुल्लियात, भाग २, पृ० ३०

Page 6

क़दीम वज़ा पे क़ायम रहूँ अगर अकबर
तो साफ़ कहते हैं, सययद, यह रंग है मैला
जदीद तर्ज़ अगर इख़्तियार करता हूँ
ख़ुद अपनी क़ौम मचाती है शोर–ओ–वावेला
जो एतिदाल की कहिए तो वह इधर–ना– उधर
ज़्यादह हद से दिये सबने पाँव हैं फैला
इधर ये ज़िद है के लम्नेड भी छू नहीं सकते
उधर ये धुन है के साक़ी सुराही–ए–मै ला
इधर है दफ़्तर–ए–तदबीर व मसलेहत नापाक
उधर है वही–ए– विलायत की डाक का थैला
ग़रज़ दोगूना अज़ाब अस्त जान–ए–मजनूं रा
बला–ए–सोहबत–ए–लैला व फ़ुरक़त–ए–लैला

कुल्लियात, भाग १, पृ० १६१/१६२

Pages 8 & 9

वाह ! क्या राह दिखाई है हमें मुर्शिद ने
कर दिया काबे को गुम और कलीसा न मिला
रंग चेहरे का तो कॉलिज ने भी रखा क़ायम
रंग–ए–बातिन में मगर बाप से बेटा न मिला
सय्यद उठे जो गज़ट ले के तो लाखों लाये
शेख़ कुरआन दिखाते फिरे पैसा न मिला।

कुल्लियात, भाग १, पृ० १

हमारी बातें ही बातें हैं सय्यद काम करता था
न भूलो फ़र्क़ जो है कहने वाले करने वाले में
कहे जो चाहे कोई मैं तो यह कहता हूँ ऐ अकबर!
ख़ुदा बख़्शे बहुत सी ख़ूबियां थीं मरने वाले में

कुल्लियात, भाग १, पृ० १६६

Pages 9 & 10

न वह बक रह गये न सर सय्यद
दिल–ए–एहबाब से निकलती है आह
ज़ात–ए–महमूद से तसल्ली थी,
ली उन्होंने भी आज ख़ुल्द की राह

बोली इबरत के होश में आओ
ए हरीसान–ए–शान–ओ–शौकत–ओ–जाह
मिट गया नक़श–ए–अहमद–ओ–महमूद
रह गया ला इलाहा इल्लल्लाह

कुल्लियात, भाग १, पृ० १८५

मदख़ूला–ए–गवर्मेन्ट अकबर अगर न होता
उसको भी आप पाते गाँधी की गोपियों में

बज़्मे अकबर, पृ० १५८

बुदधु मियां भी हज़रत–ए–गाँधी के साथ हैं
गो ख़ाक–ए–राह हैं मगर आँधी के साथ हैं

बज़्मे अकबर, पृ० ६४

Page 11

बुदधु का लफ़्ज़ था फ़क़त एक मसलहत कि बात
दिल में निहाँ है जो है असलियत की बात

गाँधी नामा, पृ० ४५

इन्क़िलाब आया नई दुनिया नया हंगामा है
शाह नामा हो चुका अब दौर–ए–गाँधी नामा है

गाँधी नामा, पृ० १

Page 12

योरप में गो है जंग कि कूव्वत बढ़ी हुई
लेकिन फुजूँ है इस से तिजारत बढ़ी हुई
मुमकिन नहीं लगा सकें वो तोप हर जगह
देखो मगर पियर्स का है सोप हर जगह

कुल्लियात, भाग २, पृ० ६३

Page 13

अब कहाँ दस्त–ए–जुनूँ तार–ए–गरीबाँ अब कहाँ
पाँयनियर और दस्त–ए–मजनूँ और ख़बर है तार की
ले लिया शीरीं ने कम्सरेट में ठेका दूध का
रेल बनवाने लगे फ़रहाद अब कोहसार की

कुल्लियात, भाग २, पृ० ६८

परियों के आशिक़ों को सौदा हुआ मिसों का
जो फाड़ते थे जामा अब कोट सी रहे हैं ।

कुल्लियात, भाग २, पृ० १५

मैं हुआ उनसे रूख़्सत ऐ अकबर !
वस्ल के बाद थैंक यू कह कर

कुल्लियात, भाग २, पृ० ५४

हर गाम पे चन्द आँखें निगराँ हर मोड़ पे एक लाइसेन्स तलब
इस पार्क में आख़िर ऐ अकबर ! मैं ने तो टहलना छोड़ दिया

कुल्लियात, भाग २, पृ० ६४

Page 14

राह में लाइसेन्स ही काफ़ी है इज़्ज़त के लिए
बस यही ले लीजिए तलवार रहने दीजिए

कुल्लियात, भाग २, पृ० २५५

पूछते क्या हो के तू पीरू है या हरबंस है
बन्दा जो कुछ हो बहर हालत बिला लाईसेन्स है

कुल्लियात, भाग ३, पृ० ८४

तहमद में बटन जब लगने लगे जब धोती से पतलून उगा
हर पेड़ पे एक पेहरा बैठा हर खेत में एक क़ानून उगा

कुल्लियात, भाग ३, पृ० १६

Page 15

ताउन–ओ–तप–ओ खटमल मच्छर सब कुछ हैं ये पैदा कीचड़ से
बम्बे की रवानी एक तरफ़ और सारी सफ़ाई एक तरफ़

कुल्लियात, भाग २, पृ० १२

किश्त–ए–दिल को नफ़ा पहुँचे अश्क ऐसी चीज़ है
दीदह–ए–गिरियां पे वाटर टेक्स की तजवीज़ है

कुल्लियात, भाग २, पृ० ८५

ये मौज–ए– फ़ैज़ है तेहज़ीब की या उसका तूफ़ाँ है
कुआँ मौजूद है घर में तो फिर पानी का नल कैसा

कुल्लियात, भाग ३, पृ० १३

Page 16

क़ारी का कुआं बन्द हो गया। लाल डिग्गी के कुएं एक दम खारी हो गये। ख़ैर खारी ही पानी पीते, गर्म पानी निकलता है। परसों मैं सवार होकर कुओं का हाल दरयाफ़्त करने गया था...क़िस्सा मुख़्तसर शहर सहरा हो गया था। अब जो कुएं जाते रहे और पानी गोहर–ए–नायाब हो गया तो यह सहरा सहरा–ए–कर्बला हो जाएगा।

बनाम मजरूह, १८६१, खलीक़, भाग २, १६८५, पृ० ५२४

Page 17

पाइप कोई खुला नहीं घर में लगी है आग
अब भागना ज़रूर हुआ ग़ौर क्या करें

कुल्लियात, भाग ३, पृ० ४२

फ़रमाया कि थोड़ा अरसा हुआ चौक की दुकानों में आग लगी।उस वक़्त पाइप बन्द होने से रिआया का

सख़्त नुक़सान हुआ मैं ने मज़कूरह शेर इस ख़्याल से मुताअस्सिर होकर लिखा था क्या कहा जाय साहब की

आब–ओ–दाने पे हुक्मरानी है

कुल्लियात, भाग ३, पृ० १३०

अगर उस वक़्त ज़माना–ए–साबिक़ की तरह कुएँ होते तो आग बर वक़्त क़ाबू में लाई जा सकती थी। शेहरों में तरमीम देखो कि हुक्मराँ तबक़ा और उमरा सिविल लाइन में हैं, ग़ुरबा के लिए ज़ीस्त के दिन गुज़ारने के वास्ते शेहर के गन्दे गोशे अलहदा हैं, मुराद इससे यही है के अमीर–ओ–गरीब यक जा न होंगें, न एक दूसरे के दु:ख दर्द से हमदर्दी होगी।

बज़्मे अकबर, पृ० १३२,१३३

Pages 18 & 19

पानी का शुक्र किस मुँह से अदा करूँ, एक दरिया है कोसी, सुबहानल्लाह इतना मीठा पानी कि पीने वाला गुमान करे के यह फीका शरबत है। साफ़, सुबुक, गवारा, हाज़िम, सरी–उन–नुफ़ूज़।

बनाम हकीम ग़ुलाम नजफ़ ख़ाँ,३ फ़रवरी, १८६०, ख़लीक़, भाग २, १९८५, पृ० ६३०

पानी सुबहानल्लाह, शहर से तीन सौ क़दम पर एक दरिया है और कोसी उसका नाम है बेशुबह चशमा–ए–आब–ए–हयात की कोई सौत इससे मिली है ख़ैर अगर युँ भी है तो भाई आब–ए–हयात उमर बढ़ाता है लेकिन इतना शीरीं कहाँ होगा।

बनाम मजरूह,फ़रवरी, १८६०, ख़लीक़, भाग २, १९८५, पृ० ५१७

पानी पीना पड़ा है पाइप का
हर्फ़ पढ़ना पड़ा है टाईप का
पेट चलता है ऑख आई है,
शाह एडवर्ड की दुहाई है

कुल्लियात, भाग १, पृ० २३६

Pages 20 & 21

कॉपी की स्याही ज़रा और स्याह और रख़्शन्दह हो और आख़िर तक रंग न बदले

बनाम तफ़ता, ७ सितम्बर १८५८, ख़लीक़, भाग १, १९८४, पृ० २६२

हर कॉपी देखता रहा हूँ, कॉपी निगार और था, मुतवस्सित जो मेरे पास लाया करता था वो और था,

वो अल्फ़ाज़ ग़लत ज्यों के त्यों हैं। यानि कॉपी निगार ने न बनाये।

बनाम मजरूह ८ अगस्त १८६१, ख़लीक़, भाग २, १९८५ पृ० ५२१

नुस्ख़ा–ए–मतबूआ में ग़लती का एहतमाल जाइज़ नहीं रखते, कॉपी नवीस के जुर्म में मुसन्निफ़ बेचारा माख़ूज़ होता है।

बनाम जुनून बरेलवी, ८ मई १८६४, ख़लीक़, भाग ४, १९९३, पृ० १५११

हमको अपने एलबम पर नाज़ का है क्या महल
बेहद अरज़ाँ हो गया है अब तो फ़ोटो आपका
आपके दर्शन मुसव्विर के भी हिस्से में नहीं
बस लिया जाता है फ़ोटू ही से फ़ोटू आपका

कुल्लियात, भाग ३, पृ० २०

क्या अजब हो गये मुझसे मेरे दमसाज़ जुदा
दोर–ए–फोनो में गले से हुई आवाज़ जुदा

कुल्लियात, भाग ३, पृ० १०

उम्मीद–ए–चश्मे मुरव्वत कहां रही बाक़ी
ज़रिया बातों का जब सिर्फ़ टेलीफ़ून हुआ

कुल्लियात, भाग ३, पृ० १७

चीज़ वो है बने जो योरूप में
बात वो है जो पॉयनियर में छपे

कुल्लियात, भाग २, पृ० ६२

अपनी गिरह से कुछ न मुझे आप दीजिए
अख़्बार में तो नाम मेरा छाप दीजिए
देखो जिसे वो पॉनियर ऑफ़िस में है डटा
बहर–ए–ख़ुदा मुझे भी कहीं छाप दीजिए
चश्म–ए–जहाँ से हालत–ए–असली छुपी नहीं
अख़्बार में जो चाहिए वो छाप दीजिए

कुल्लियात, भाग १, पृ० २५४

Page 22

घर के ख़त में है के कल हो गाया चेहलुम उसका
पॉयनियर लिखता है बीमार का हाल अच्छा है

कुल्लियात, भाग १, पृ० ६८

हवा–ए–तूबा है अब न सर में न मौज–ए–कौसर है अब नज़र में
हवस अगर है तो बस यही के हम भी छप जाएं पॉयनियर में

कुल्लियात, भाग १, पृ० २२६

मुझे भी दीजिए अख़्बार का वरक़ कोई,
मगर वो जिसमें दवाओं का इश्तिहार न हो।

क़िदवाई, इन्तिख़ाब, पृ० १५३

Pages 23 & 24

आज़ाद : आज प्रोफ़ेसर लाक साहब ज़बान–ए–पाक संस्कृत की अश्रफ़ियत पर लेक्चर देने वाले हैं। ये बुज़ुर्गवार बड़े मुक़द्दस और आलिम–ए–यगाना यक्ता–ए–ज़माना, मशहूर–ए–दियार–ओ–अमसार हैं।

छम्मीजान : लाहौल वलाकुव्वत भई ख़ुदा की क़सम कितने भौंडे हो कितना ख़राब मज़ाक है, प्रोफ़ेसर साहब के मशहूर होने की एक ही कही, हम इतने बड़े हुए आज तक नाम भी सुना हो तो क़सम लीजिए, क्या दुन्नी खाँ से ज़्यादा मशहूर हैं?

फ़साना–ए–आज़ाद, भाग १, पृ० १५

बहार : ख़ुदा कामयाब करे, लेकिन सुनिए तो सही, ये तो अख़्बार है, इसमें ख़ुलू–ए–ओहदा और तनख़्वाह, और दरख़्वास्त का कैसा झगड़ा? इसमें मुहारबे का हाल, या जंग–ओ–जिदाल, इल्मी और पॉलीटिकल क़ील–ओ– क़ाल चाहिए या ये जंजाल?

आज़ाद : तो क़िबला आपने अख़्बार पढ़ा ही नहीं, पीर–ओ–मुर्शिद, अख़्बार तो इत्र–ए–मजमुआ है, लड़कों का अतालीक़ जवानों का नासह–ए–शफ़ीक़ बुड्ढों के तजरबे की कसौटी, रुक्न–ए–रकीन–ए–सलतनत, तुज्जार का दोस्त, सन्नाओं का यार–ए–ग़ार रिआया का वकील,जमहूर–ए–अनाम का सफ़ीर, मुदब्बिरों का मुशीर, किसी कालम में मुल्की छेड़–छाड़ कहीं सोशल उमूर में तकरार, कहीं अश्आर–ए–आबदार, कहीं नोटिस और इश्तिहार अंग्रेजी अख़्बारों में तरह–तरह की बातें दर्ज होती हैं, और देशी अख़्बार भी इनका ततब्बो करते हैं।

फ़साना–ए–आज़ाद, भाग १, पृ० १६३

एक एक बादह–ए–ख़ुदपरस्ती में महव–ओ–सरशार है। कौन्सिल और कमेटी और अख़्बार मौजूद है। फिर आपस में मुहब्बत बढ़ाने, भाई चारा करने की क्या ज़रूरत है।

रूक़आत–ए–अकबर, पृ० १२६

Page 25

मालगाड़ी पे भरोसा है जिन्हें ऐ अकबर
उनको क्या ग़म है गुनाहों की गरां बारी का

कुल्लियात, भाग ३, पृ० ८

तन्हाई–ओ–ताअत का ये दौर है अब दुश्मन
पेड़ों पे न वो ताइर, सहरा पे न वो जोबन
जंगल के जो थे साईं वो रेल के हैं पाईं
इमली की जगह सिगनल कुमरी की जगह इंजन

कुल्लियात, भाग २, पृ० ५६

अभी इस राह से कोई गया है
कहे देती है शोख़ी नक़शे पा की

मीर हुसैन तसकीन देहलवी

अभी इंजन गया है इस तरफ़ से
कहे देती है तारीकी हवा की

कुल्लियात, भाग १, पृ० २५१

Page 26

सुनते नहीं हैं शेख़ नई रोशनी की बात
इंजन की इनके कान में अब भाप दीजिए

कुल्लियात, भाग १, पृ० २५४

आगे इंजन के दीन है क्या चीज़
भैंस के आगे बीन है क्या चीज़

कुल्लियात, भाग १, पृ० २४३

इसका पसीजना है और इसके हैं भपारे
योरप ने एशिया को इंजन पे रख लिया है।

कुल्लियात, भाग ३, पृ० १०४

Page 27

मशीनों ने किया नेकों को रूख़्सत
कबूतर उड़ गये इंजन की पें से

कुल्लियात, भाग २, पृ० ६४

कहते हैं राह–ए–तरक्क़ी में हमारे नौजवां
ख़िज़्र की हाजत नहीं हमको जहाँ तक रेल है

कुल्लियात, भाग २, पृ० ६८

Page 27, n

मैं इक़बाल साहब की क़दर इस सबब से नहीं करता
के दरबार–ए–लनदन में वोह मक़बूल है।
तालिब हूँ मैं तो अपने ही दिल की निगाह का
सौदा नहीं है मुझको हरीफ़ों की वाह का

रूक़आत, पृ० ११५–११६

Page 28

ज़माने का रंग आप देख रहे हैं, झूठी इज़्ज़त और नुक़सान रसाँ लज़्ज़तों का शौक़ ग़ालिब है, नाम है मुलकी तरक़्क़ी का लेकिन कोशिश उन बातों की हो रही है जिन से सोसाइटी टुकड़े– टुकड़े हो जाए।

रूक़आत, पृ० ११६

ये नज़में इन्क़िलाब रोकने के लिए नहीं हैं, यादगार–ए–इन्क़िलाब हैं, हिस्सह–ए–दोम में ये अशआर पाइएगा।

नज़म–ए–अकबर को समझ लो यादगार–ए–इन्क़िलाब
ये उसे मालूम है टलती नहीं आई हुई।

रूक़आत, पृ० ३६–३७

Page 30

कहा मन्सूर ने ख़ुदा हूँ मैं
डार्विन बोला बूज़नः हूँ मैं

हँस के कहने लगे मेरे एक दोस्त
फ़िक्र–ए–हर कस बक़द्र–ए–हिम्मत–ए–ऊस्त

कुल्लियात, भाग ३, पृ० १४०/१४१

तू–ओ–तूबा–ओ–मा–ओ–क़ामत–ए–यार
फिक्र–ए–हर कस बक़द्र–ए–हिम्मत–ए–ऊस्त

हाफ़िज़, दीवान, पृ० २७

Page 31

अगर डार्विन की ये थ्योरी दुरूस्त है के इन्सान बन्दर से पैदा हुआ तो इस मंज़िल–ए–तमुद्दन पर एहल–ए–यौरूप को इन्सानियत के बहुत से आला मुहासिन का हामिल होना चाहिए था, मगर ऐसा नहीं, इस पर अफ़सोस करता हूँ।

या इलाही ये कैसे बन्दर हैं
इरतिक़ा पर भी आदमी न हुए

बज़्मे अकबर, १६५

Page 32

जो गुज़रोगे उधर से मेरा उजड़ा गाँव देखोगे
शिकस्ता एक मस्जिद है बग़ल में गोरा बारक है।

कुल्लियात, भाग २, पृ० ४८